एसडी कॉलेज में राष्ट्रीय गोष्ठी का हुआ समापन, दूसरे दिन विद्वानों ने भारतीय भाषाओं पर दिए व्याख्यान

ऐ मांओं, बहनों, बेटियों दुनिया की जीनत तुमसे है

भास्कर न्यूज | पानीपत

हिंदुस्तानी रवायत सांझी संस्कृति हाली और शिब्ली विषय पर एसडी कॉलेज में आयोजित राष्ट्रीय गोष्ठी के दूसरे दिन प्रथम सत्र में स्त्री मुक्ति और हाली के माध्यम से विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। दूसरे सत्र में भारतीय भाषाएं और बोलियां विषय पर चर्चा हुई।

कार्यक्रम में दयालसिंह कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय से आए डॉ. मौला बख्श ने कहा कि हाली स्त्रियों के मसीहा हैं। हाली पहले मर्द हैं, जो स्त्रियों की पीड़ा का साक्षात्कार अपने नजमों में बयां करते हैं। उनकी शायरी का संदर्भ देते हुए उन्होंने कहा कि ऐ मांओं, बहनों, बेटियों दुनिया की जीनत तुमसे है। कौमों की इज्जत तुमसे है। उन्होंने बताया कि हाली की पूरी शायरी हिंदुस्तानी आवाम के उस दौर की शायरी है, जब पूरा भारत गुलाम है। वे उर्दू के पहले रचनाकार हैं जो जीवनी भी लिखते हैं, संस्मरण भी लिखते हैं, शायरी भी करते हैं और आलोचना भी लिखते हैं। कहने का आशय यह है कि हाली पानीपत के ऐसे पूर्वज हैं, जो युद्ध की सरजमी को सृजन धर्मिता से जोड़ते हैं।

उर्दू नहीं किसी एक कौम की भाषा : प्रो तबरेजी

उर्दू अकादमी हरियाणा के संपादक प्रो. शम्स तबरेजी ने कहा कि उर्दू प्रेम की भाषा है। उर्दू तहजीब की भाषा है। कोई भाषा गुनाह के लिए किसी को प्रेरित नहीं करती है, बल्कि गुनहगार भाषाओं को बदनाम करते हैं। उन्होंने कहा कि उर्दू मुस्लिमों की भाषा नहीं है, बल्कि हिंदुस्तानी आवाम की ऐसी जुबान है, जिसमें इंकलाब जिंदाबाद जैसा नारा लिखा गया है, जिसमे इश्क की तकरीर लिखी गई हैं। उर्दू शायरी ने गालिब जैसा हीरो दिया। उर्दू भगत सिंह जैसे इंकलाबियों की भी जुबान रही है। उर्दू को जाने बगैर हिंदुस्तान के इतिहास को जाना नहीं जा सकता। उर्दू का जन्म हिंदुस्तान में हुआ है। मथुरा, वृंदावन की धरा उर्दू की जननी है।

पानीपत. एसडी पीजी कॉलेज में आयोजित विमर्श में बोलते डॉ. इर्तजा करीम, मंच पर राजीव रंजन, प्रेम तिवारी, द्वारिका प्रसाद, चारू मित्र व अन्य (ढाएं से)।

हाली सृजनपीठ की स्थापना होगी

डीसी अजित बालाजी जोशी ने घोषणा की कि अल्ताफ हुसैन हाली और अल्लामा शिब्ली नौमानी के स्मृति के सौवें वर्ष के अवसर पर उनकी मित्रता को समर्पित एसडी कॉलेज पानीपत और शिब्ली अकादमी आजमगढ़ में सृजनपीठ की स्थापना की जाएगी। उनकी घोषणा से सहमति जताते हुए शिब्ली अकादमी के निदेशक डॉ. इश्तियाक अहमद जिल्ली और एसडी कॉलेज के प्रधान दिनेश गोयल एवं प्राचार्य डॉ.अनुपम अरोड़ा ने सृजनपीठ के संचालन की जिम्मेदारी स्वीकार की। इस अवसर पर लोगों से गुफ्तगू करते हुए डीसी ने कहा कि सौ वर्ष बाद हिंदी, उर्दू दोनों भाषाओं के लोग एक साथ बैठकर इन दोनों महान रचनाकारों की रचनाओं पर विमर्श कर रहे हैं। सही अर्थों में यह पानीपत के लोगों द्वारा दी गई श्रद्धांजलि है। उन्होंने कहा कि नवंबर माह में भी जिला प्रशासन पानीपत के शैक्षणिक संस्थाओं के सहयोग से एक सार्थक आयोजन का संयोजन करेगा।

आजमगढ़ का निमंत्रण : शिब्ली अकादमी सौवें वर्ष के अवसर पर राष्ट्रीय उत्सव का आयोजन 28 नवंबर को आजमगढ़ में करेगी। इस अवसर पर देश विदेश से विद्वानों की भागीदारी सुनिश्चित हो रही है। इस आयोजन में हाली की सरजमीं से पानीपत के लोगों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है।

हाली हिंदुस्तानी रवायत की हैं जुबान : डॉ. करीम

दिल्ली विश्वविद्यालय से आए डॉ. इर्तजा करीम ने अपने विचारों में कहा कि हाली इस विमर्श के माध्यम से नई पीढ़ी के बीच जिंदा हो गए हैं। विद्यार्थियों से रूबरू होते हुए उन्होंने सवाल किया कि हाली लोगों के बीच कैसे जिंदा रहेंगे। उनके सवाल का जवाब देते हुए एसडी कॉलेज के विद्यार्थी एवं कवि कार्तिक ने कहा कि हम नौजवानों की जिम्मेदारी है कि हाली को समाज के बीच ले जाएं। हाली न हिंदुओं के हैं न ही मुस्लिमों के हैं। वे हिंदुस्तानी रवायत की जुबान हैं।

भाषाएं सींचती हैं समाज को : डॉ. प्रेम तिवारी

दूसरे सत्र में भारतीय भाषाएं और बोलियां विषय का प्रवर्तन करते हुए दयाल सिंह कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय से आए डॉ. प्रेम तिवारी ने कहा कि भाषाएं नदी की तरह हैं। नदी जिस तरह समाज की सभी गंदगी को समा कर धरती को उर्वर बना देती है, उसी तरह भाषाएं समय समाज को सींचते हुए सांस्कृतिक प्रवर्तन की लहर पैदा करती हैं। कोई भाषा तानाशाह नहीं पैदा करती हैं। हिटलर जर्मन भाषा का नागरिक है और यह दुनिया जानती है कि जर्मन भाषा में जो साहित्य लिखा गया है, वह श्रेष्ठता दुनिया की दूसरी भाषाओं में देखने को नहीं मिलती है।

बोलियां हैं समाज की जिंदगी : द्वारिका प्रसाद

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए द्वारिका प्रसाद चारुमित्र ने कहा कि भाषाओं को साहित्य संवर्धित करता है। भाषाओं की बोलियां प्राण हैं और बोलियां समाज की जिंदगी। प्रेमचंद का पूरा साहित्य आमजन की भाषा में लिखा गया है। उनके साहित्य ने समाज की बोलियां समाहित हैं। निष्कर्ष रूप में हम देख सकते हैं कि गोबर, धनिया और होरी ऐतिहासिक पात्र के रूप में स्थापित होते हैं और इन पात्रों की भाषा हिंदी साहित्य के सृजन का पैमाना बन जाते हैं।

अंग्रेजी जरूरी, पर अपनी भाषाओं अपमान न हो : राजीव

संचालन करते हुए संस्कृतकर्मी राजीव रंजन ने कहा कि सपने मातृ भाषा में दिखाई देते हैं। उधार की भाषा में सृजन नहीं किया जा सकता। अंग्रेजी ज्ञान जरूरी है, लेकिन हिंदुस्तानी भाषाओं के अपमान की शर्तों पर नहीं। यह सत्य है कि अंग्रेजी को जाने बिना दुनिया के श्रेष्ठतम साहित्य को नहीं जाना जा सकता, लेकिन यह भी सत्य है कि मातृ भाषा के ज्ञान के बिना अपनी ही दुनिया में आदर्श नागरिक नहीं हो सकता।

पानीपत. एसडी पीजी कॉलेज में आयोजित विमर्श कार्यक्रम में उपस्थित छात्राएं।

उर्दू सिखाने को निःशुल्क कक्षा

एसडी कॉलेज प्राचार्य डॉ. अनुपम अरोड़ा ने कहा कि हाली और शिब्ली सौ वर्ष पहले दोस्त थे। उनकी मृत्यु के सौ वर्ष बाद उनकी दोस्ती जिंदाबाद हो गई है। उन्होंने उर्दू विद्वानों के प्रस्तावों को स्वीकार करते हुए कहा कि पानीपत के जो भी नागरिक उर्दू सीखना चाहते हैं, उनके लिए साप्ताहिक शैक्षणिक क्लास आरंभ की जाएगी, जो निशुल्क होगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डाइट प्राचार्या सरोजबाला गुर ने कहा कि कोई भी भाषा किसी जाति विशेष या धर्म की नहीं होती है। उन्होंने कहा कि शिक्षक समाज का निर्माण करता है। समाज को दिशा देता है। शिक्षक समाज में ज्ञान दान के माध्यम से अंधों को नेत्रदान देने जैसा उपहार देता है।

दिनभर चली गोष्ठी से लिया ज्ञान

कॉलेज की तरफ से धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डा. संगीता गुप्ता ने कहा कि वर्तमान शैक्षणिक सत्र के आरंभ में यह दो दिवसीय विमर्श की अनुगूंज वर्षों तक सुनाई देती रहेगी। दिनभर चली विमर्श में विद्यार्थियों के साथ-साथ जिलेभर से आए शिक्षा विभाग के हिंदी, अंग्रेजी और पंजाबी के शिक्षकों ने शिरकत की। इस अवसर पर मौलाना उमेर सिद्दिकी, डॉ. रवीन्द्रनाथ राय, कन्हैया लाल व जगदीश चंद्र बर्नवाल कुंद ने भी विचार प्रकट किए। विशेष रूप से डॉ. आरपी सैनी, डॉ. एसके वर्मा, प्रो. संतोष कुमारी, प्रो. बालकिशन शर्मा, प्रो. नरेंद्र कौशिक भी उपस्थित रहे।

पानीपत में भाषा यूनिवर्सिटी की मांग

विद्वानों ने विमर्श के आखिरी सत्र में प्रस्ताव पारित कर राज्य व एवं केंद्र सरकारों से हाली और शिब्ली के स्मृति वर्ष को मित्रता वर्ष के रूप में मनाने की मांग की। इस मौके पर आजमगढ़ में अल्लामा शिब्ली एवं पानीपत में हाली की स्मृति में हिंदुस्तानी भाषाओं के समग्र अध्ययन के लिए यूनिवर्सिटी स्थापना की मांग की गई।